शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मार्च 2020
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

भारतीय संस्कारों के साथ पाश्चात्य जीवन शैली में निर्वासित होने की पीड़ा का आख्यान: 'हवन'

योगेन्द्र सिंह, (शोधार्थी) हिंदी विभाग
चौ. चरण सिंह विश्वविद्यालय
मेरठ, उत्तरप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

भारतीय समाज सदैव से ही पश्चिमी देशों के वैभव, विलासिता एवं चकाचौंध के प्रति पूर्वाग्रहों से ग्रस्त रहा है। जिसके कारण वह केवल इन देशों का एक पक्ष ही देख पाता है। वैभव एवं विलासिता के पर्दे के पीछे छिपी वास्तविकता से वह अनभिज्ञ ही बना रहता है। पश्चिमी सभ्यता एवं संस्कृति के दुष्परिणामों की अनुभूति उसे तब तक नहीं होती जब तक वह स्वयं इसका ग्रास नहीं बन जाता। उपभोक्तावादी संस्कृति के पोषक एवं जनक देशों का कटु यथार्थ यही है कि विकासशील देशों के साथ-साथ इसका सबसे बड़ा शिकार वह स्वयं ही बन गए हैं। परिणामस्वरूप वहाँ मूल्य विघटन, संस्कृति से व्यामोह, परंपराओं एवं मान्यताओं से मोह भंग की स्थिति साधारण बात हो गई है। पश्चिमी समाज की उत्तर आधुनिक जीवन-शैली ने स्वयं के साथ-साथ वहाँ रह रहे प्रवासियों को भी अंधकार के ऐसे गर्त में डाल दिया है; जिसमें फँसकर वह पल-पल छटपटाते रहते हैं, लेकिन स्वयं को इसके मोह से विमुक्त नहीं कर पाते हैं। सुषम बेदी ने अपने साहित्य में अमेरिका के इसी वैभव एवं विलासिता के पीछे छिपे यथार्थ को उद्घाटित किया है। आपने अपने साहित्य में अमेरिका एवं पश्चिमी देशों के इन्हीं स्याह एवं सफेद पक्षों को उजागर करके भारतीय समाज में इन देशों के प्रति पूर्व से विद्यमान धारणाओं को पुनः नवीन दृष्टिकोण प्रदान किया है। सुषम बेदी के साहित्य की यही विशिष्टता उन्हें प्रवासी हिंदी साहित्य के महत्त्वपूर्ण हस्ताक्षर के रूप में प्रतिष्ठित करती है।

प्रमुख शब्द *- भारतीय, संस्कार, पाश्चात्य, जीवन-शैली।*

भूमिका

'हवन' सुषम बेदी का 1989 में प्रकाशित महत्त्वपूर्ण उपन्यास है। यह उपन्यास सुषम बेदी के अमेरिका प्रवास के आरंभिक वर्षों से जुड़ी महत्त्वपूर्ण कृति है। जिसके कारण वह अमेरिका में जाकर नए बसे प्रवासियों की पीड़ा एवं संघर्ष को बखूबी जान एवं समझ रही थी। वह अपने आसपास जो देख एवं समझ रही थीं, उसी को आधार बनाकर 'हवन' उपन्यास की कथावस्तु लिखी है। अतः कहा जा सकता है कि यह उपन्यास अमेरिका में रह रहे प्रवासी भारतीयों के जीवन संघर्ष, पीड़ा और छटपटाहट का जीवंत दस्तावेज है, जिसमें एक ओर पश्चिमी देशों की उत्तर आधुनिक जीवन-शैली का कच्चा चिट्ठा प्रस्तुत किया है, वहीं दूसरी ओर इन देशों में रहने वाले प्रवासी भारतीयों के जीवन संघर्ष एवं त्रासदी को भी अभिव्यक्त किया गया।

किरण ग्रोवर ने अपने लेख 'सुषम बेदी का 'हवन' : प्रवासी समाज के संघर्ष का संपुटन' में प्रवासी भारतीय समाज के इसी यथार्थ बोध को इस प्रकार से रेखांकित किया है, "सुषम बेदी का 'हवन' उपन्यास अमेरिका में प्रवासियों की जिदंगी का यथार्थ चित्रण करने वाला उपन्यास है। जिसमें दर्शाया गया है, प्रवासी विदेशी सभ्यता

की भौतिक चमक-दमक से अपने जीवन को कैसे होम कर रहे हैं। सुषम बेदी का उपन्यास 'हवन' निश्चय ही अपनी समस्त अस्मिता को गंवाकर अगली पीढ़ी के लिए होम करती हुई पूरी पीढ़ी की त्रासदी का सफल चित्रण है, जिसमें प्रत्यक्ष रूप से प्रवासियों के संघर्ष का संपुटन मिलता है।"[1] 'हवन' उपन्यास में लेखिका ने अमेरिका में रह रहे प्रवासी भारतीयों के जीवन यथार्थ को दर्शाकर प्रवास के लिए लालायित भारतीयों को आईना दिखलाया है कि अपने देश समाज एवं संस्कारों से बिछड़कर पराए परिवेश एवं संस्कृति में सामंजस्य बिठाना कितना कठिन एवं दुष्कर है। भारतीय संस्कारों एवं पश्चिमी सभ्यता में सामंजस्य बिठाने की यही उठा-पटक प्रवासी भारतीयों को अंदर ही अंदर तोड़ती रहती है। परिणामस्वरूप वह न तो पूरी तरह अपने संस्कारों से जुड़े रह पाते हैं और न ही निर्वासित देशों की संस्कृति को पूर्ण रूप से आत्मसात कर पाते हैं। अमेरिका में बसे प्रवासी भारतीयों की इसी छटपटाहट एवं वेदना की अभिव्यक्ति सुषम बेदी ने 'हवन' उपन्यास में की है।

'हवन' : पीड़ा का आख्यान

प्रस्तुत उपन्यास का ताना-बाना अमेरिका में रह रहे प्रवासी भारतीय समाज को केंद्र में रखकर बुना गया है। उपन्यास की नायिका गुड्डो के माध्यम से लेखिका सुषम बेदी ने अमेरिका में रह रहे संपूर्ण प्रवासी भारतीय समाज की जीवन कथा कही है। गुड्डो अपने पति की मृत्यु के पश्चात् अपने बच्चों की परवरिश तथा बेहतर जीवन की चाह में अपनी छोटी बहन पिंकी के पास अमेरिका चली आती है, लेकिन अमेरिका आने के पश्चात बहुत शीघ्र ही उसे ये अहसास हो जाता है कि भौतिक संपन्नता एवं आधुनिकता के हिमायती इस देश में गुजर बसर करना इतना आसान नहीं है, जितना दूर से इसे दिखलाया एवं बतलाया जाता है। गुड्डो के लिए अमेरिका के परिवेश में सामंजस्य बिठाना जितना कठिन था उससे कहीं ज्यादा कठिन भारत वापिस लौटना था। परिणामस्वरूप आर्य समाजी परिवार में पली-बढ़ी गुड्डो को अपने संस्कारों से समझौता करना पड़ता है और वह सेल्सगर्ल की नौकरी करने लगती है। भारत से उच्च शिक्षा प्राप्त करके अमेरिका जाने वाले युवाओं का अपनी योग्यता का भ्रम किस प्रकार टूटता है, 'हवन' उपन्यास इसका सूक्ष्मता से विश्लेषण करता है। वह केवल गुड्डो के माध्यम से ही नहीं अपितु उपन्यास के अन्य पात्रों के माध्यम से भी इसी सच की बानगी करवाती है।

भारत गए उच्च शिक्षित डॉक्टर, इंजीनियर एवं अन्य परिवारों को अपने क्षेत्रों में काम न मिलने पर वह वहाँ पर मजदूरी करते हैं, टैक्सी चलाते हैं अथवा होटलों में वैटर की नौकरी करते हैं। अमेरिका में रह रहे प्रवासी भारतीय समाज का यह सच न कोई देखना चाहता है और न ही कोई बतलाना चाहता है। लेखिका सुषम बेदी ने प्रस्तुत उपन्यास में अमेरिका में रह रहे प्रवासी भारतीयों के इसी कटु यथार्थ को दृष्टि प्रदान की है। वे उपन्यास में जगह-जगह ऐसी पात्र एवं घटनाओं का संयोजन करती है, जिससे अमेरिका में भारतीयों की वास्तविक स्थिति उजागर हो जाती है। 'हवन' उपन्यास में भारत से गए इंजीनियर अरुण के माध्यम से वह अमेरिका में नौकरी पाने की जद्दोजहद और इसी संघर्ष में भटकती युवा भारतीय पीढ़ियों का जीवन यथार्थ प्रस्तुत करती है, "अरुण देखने में ऐसा शालीन और तहजीबदार लगता था कि गुड्डो समझ ही नहीं पा रही थी कि वह टैक्सी ड्राइवर कैसे हो

सकता है। पूछ ही बैठी, आप वैसे करते क्या हैं ?

वैसे क्या ? आप देख ही रही हैं, टैक्सी चलाता हूँ।[2]

अरुण देखने में भारतीय उच्च शीक्षित एवं संपन्न परिवार से लगता था, इसीलिए गुडडो को यह यकीन कर पाना थोड़ा मुश्किल हुआ कि वह ड्राइवर होगा, लेकिन गुड्डो के लिए अमेरिका का यह वह सच था जिससे वह अभी तक बेखबर थी और उसी की तरह बेखबर है, भारत के लाखों युवा, जो अमेरिका जाकर धनवान बनने के ख्वाब देखते रहते हैं, जबकि यथार्थ उनके स्वप्न के बिल्कुल विपरित है।

अमेरिका में रह रहे ये प्रवासी भारतीय वर्क परमिट मिलने, ग्रीन कार्ड हासिल करने तथा यहाँ रहने के स्थायी जुगाड़ करने के लिए नैतिक एवं अनैतिक सभी दांवपेच अपनाते हुए धीरेधीरे अपने संस्कारों, मूल्यों एवं मान्यताओं से विमुख होकर समझौतावादी संस्कृति का हिस्सा कब बन जाते हैं, इसका अहसास उन्हें बहुत बाद में होता है। 'हवन' उपन्यास का पात्र अरुण ग्रीन कार्ड प्रप्ति के लिए अपनी अमेरिकन प्रेमिका जूडी से शादी कर लेता है, लेकिन न तो वह उसे दिल से अपना पाता है और न ही उसके प्रेम को कोई महत्त्व दे पाता है। गुड्डो के अरुण व जूडी के वैवाहिक जीवन के विषय में पूछने पर वह कहता है, "बहुत मुश्किल है जवाब देना। कभी बहुत बेगाना-सा लगता है अपने ही अपार्टमेन्ट में। हर एक चीज वहाँ जूडी के मुताबिक है। मैं भी जैसे उसकी एक मन-मुताबिक चीज हूँ जैसा कि आमतौर पर आदमी घर में महसूस करता है। लगता है घर जूड़ी का है और मैं वहाँ एक मेहमान की तरह ठहरा हूँ। मैं अपने मन से कुछ कर ही नहीं सकता। अभी भी सोचता हूँ कि किसी हिन्दुस्तानी लड़की से शादी करके सही ढंग का घर बसाऊँ, इसीलिए माँ-बाप को मैने लड़कियाँ देखने से रोका भी नहीं।"[3] अमेरिका में रहने की स्थायी व्यवस्था होते ही इन भारतीयों का स्वार्थ एकदम जाग उठता है। उनके यहाँ रहने, काम करने की व्यवस्था कराने वाली इन्हीं अमेरिकी औरतों से इन्हें दिक्कत होने लगती है और पत्नी के रूप में भारतीय नारी की परंपरागत छवि उन्हें दिखाई देने लगती है। प्रस्तुत उपन्यास में सुषम बेदी जी ने अमेरिकी में रह रहे प्रवासी भारतीयों की इसी अवसरवादी छवि का पर्दाफाश किया है।

गुड्डो की भाँति ही यहाँ आने वाले अधिकांश व्यक्तियों को अमेरिकी वैभव एवं संपन्नता के जो स्वप्न दिखलाए जाते हैं, वे सभी यहाँ आते ही टूट जाते हैं। अमेरिका के सुख एवं वैभव को पाने की कीमत इतनी अधिक चुकानी पड़ती है कि व्यक्ति न तो इधर का रह पाता और न ही उधर का। वह जितना अधिक इस उपभोक्तावादी संस्कृति का अंग बनता जाता है उतना ही तेजी से अपने संस्कारों एवं मूल्यों से भी पदच्युत होता जाता है। गुड्डो की छोटी बहन गीता की बेटी राधिका इसी पाश्चात्य संस्कृति के मोह से स्वयं को नहीं बचा पाती और धीरे-धीरे इसी व्यामोह के भँवर में फँसकर उसका दुःखद अंत हो जाता है। "अगली सुबह सबने अखबार में पढ़ा-पार्किंग लॉट के पास एक लड़की की लाश...लाश के घावों से ऐसा प्रतीत होता है कि आदमियों के एक गुट ने सामूहिक बलात्कार किया। चाकुओं के निशान बताते हैं कि बलात्कार के बाद अगर कुछ प्राण भी बचे होंगे तो चाकुओं के प्रहारों ने यह काम पूरा कर दिया।"[4] यह दुखद त्रासदी केवल राधिका की त्रासदी नहीं है, अपितु यहाँ पली-बढ़ी उस संपूर्ण युवा पीढ़ी की त्रासदी है जो धीरे-धीरे वहाँ

की जीवन शैली एवं उपभोक्तावादी संस्कृति के अनुगामी हो गए हैं।

इन भारतीय अमेरिकियों की युवा पीढी में एक ऐसा वर्ग अस्तित्व में आ रहा है, जिसके लिए उपभोग ही वास्तविक सुख है। परिणामस्वरूप माता-पिता से उनकी सोच एवं दृष्टि दोनों ही अलग होती जा रही है। दो पीढ़ियों का यही अंर्तद्वंद्व माता-पिता एवं संतानों के बीच की दूरी को इतना बढ़ाता जा रहा है कि इन रिश्तों का महत्त्व एवं सम्मान दोनों ही पीछे छूटते जा रहे हैं। उपन्यास की पात्र गीता की पुत्री कनिका भी ऐसी ही युवा पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करती है। उसके माता-पिता उसे अथाह परिश्रम एवं संघर्ष करके डॉक्टर बनाते हैं, लेकिन वह इनके त्याग एवं तपस्या को कोई महत्त्व न देकर अपने साथी अमेरिकी डॉक्टर से प्रेम विवाह करना चाहती है। "ओह! कितना ढकोसला करना पड़ता है। क्यों नहीं कह देती - पापा, मुझे मिशेल पसंद है, फिर काला हो या जो भी, है तो वह भी डॉक्टर और उसका साथी भी है। पर डरती है कनिका - कहीं पापा को हार्ट-अटैक ही न हो जाए। पहले ही राधिका की वजह से शायद इतने टूटे-टूटे से दिखते हैं पापा। गुमसुम, उदास...जैसे कोई बोझ लगातार मसल रहा हो पापा को। उस दिन जब वह वीक एण्ड के बाद लौट रही थी तो अस्पताल के अपार्टमेन्ट में उसे छाती से लगाकर बोले थे पापा, बेटी तू सब कुछ है मेरा। कनिका ने आँखें उठाकर ऊपर देखा तो पापा की आँखें पनियाई हुई थीं।'[5] इस प्रकार अमेरिका में रह रहे भारतीय समुदाय में पहली पीढ़ी जहाँ अपने संस्कारों को संभालना चाहती है, वहीं उन्हीं की संतानों के लिए इन सब का कोई भी मोल नहीं है। सुषम बेदी ने 'हवन' उपन्यास में इसी पीढ़ीगत द्वंद्व, नस्लभेद तथा विदेशी परिवेश में सामंजस्य न बिठाने की समस्या को प्रमुखता से उजागर किया है।

अमेरिका में इस प्रकार की समस्याएँ वहाँ पैदा हुई और पली-बढ़ी युवा पीढ़ी में दिन-प्रतिदिन उभरकर सामने आ रही हैं। उपन्यास में गुड्डो का बेटा राजू, गीता की पुत्री राधिका और पिंकी का किशोर बेटा अर्जुन अमेरिका में प्रवासी भारतीयों की उसी युवा पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो पूरी तरह से लक्ष्यविहीन जीवन जी रहे हैं। पथ भटकाव एवं दिशाहीनता की यह स्थिति इन युवाओं को ड्रग्स के दलदल, जिस्मफरोशी तथा समलैंगिकता की ओर ले जाकर दुःखद अंत तक पहुँचा रही है। अफसोस इसकी बानगी उन्हें तथा उनके परिवार को सबकुछ खत्म हो जाने के पश्चात् होती है। पिंकी और सतिन्दर दोनों अपनी कामकाजी स्थिति में इतना व्यस्त होते हैं कि उनका बेटा अर्जुन कब इस लत का शिकार होता है, यह वह बहुत बाद में जान पाते हैं, "फोन की घंटी बजी। अर्जुन के दोस्त का फोन था। गे बार में ड्रग्स ज्यादा लेने की वजह से बेहोश है, एम्बुलेंस बुलाई हुई है। पिंकी-सतिन्दर जिस हाल में थे, कोट चढ़ाकर निकल गए। बार दूर था भी नहीं। घबराहट में पिंकी के ठंडे पसीने छूट रहे थे - खट्टी डकारें आ रही थीं। सारा खाना जैसे मुँह को उलट रहा था। अर्जुन को कुछ हो गया तो क्या करेगी...मन में तरह-तरह के डर उठते रहे और अर्जुन के स्वास्थ्य की कामना करती रही। डॉक्टर ने सलाह दी थी कि मनोरोग के डॉक्टर को दिखलाना ज्यादा जरूरी है, इसे मादक द्रव्य के सेवन से बचा सकें। जैसे इतना काफी नहीं था - पिंकी पर और बिजलियाँ गिरी। मनोरोग के डॉक्टर ने ही पिंकी और सतिन्दर को अलग से बतलाया कि उसके लक्षण अपने ही सेक्स में रुचि लेने के

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मार्च 2020
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

हैं।"[6] अमेरिका में यह कहानी केवल अर्जुन की ही नहीं है बल्कि वहाँ रह रहे अधिकांश भारतीय परिवारों की है, जिनके बच्चे बहुत तेजी से अमेरिका की इस चकाचौंध में खोते जा रहे हैं। अफसोस सच को जानते एवं देखते हुए भी कोई इसे स्वीकार करने का साहस नहीं दिखाता है और धीरे-धीरे मादकता की मोहिनी का आदि बनकर ये युवा पीढ़ी भारतीय से अमेरिकन भारतीय बन रहे हैं। सुषम बेदी ने इसी सच की बानगी अपने उपन्यास में प्रस्तुत की है।

गुड्डो की बहन गीता की पुत्री राधिका भी अपने माता-पिता के बनाए नियमों में बंधना नहीं चाहती है। वह अमेरिकी उन्मुक्त परिवेश को खुलकर जीना चाहती है और इसी जीवन की चाहत में स्वयं ही होम हो जाती है, "राधिका का संसार को जीत लेने वाला आत्मविश्वास तो पहले ही टूट चुका था। बहुत देर बाद जाकर उसे अहसास हुआ था कि जिस दुनिया के पीछे वह भाग रही थी, जिसे वह अपना समझती थी और चाहती थी, जिसके दम पर उसने अपने माँ-बाप के बनाए हर नियम को तोड़ा था, बचपन की भोली आँखे इस महीन दुराव के पर्दे को साफ-साफ देखा नहीं था। जिस नाइट क्लब, डिस्को और उससे जुड़े अमेरिकी दोस्तों-सहेलियों की दुनिया में वह दाखिल हुई थी उसके नियम तो उसके घर की दुनिया से सख्त थे। वहाँ बाहर से सबकुछ जगमग आकर्षक एवं चहल-पहल भरा था....भीतर खोखला, अकेलापन, बदबू, गन्दगी, अश्लीलता, हिंसा और मारा-मारी।"[7] अमेरिका में रह रहे प्रवासी भारतीय ही नहीं अपितु वहाँ के मूल निवासी भी इसी संकट से गुजर रहे हैं। सामाजिक परिवर्तन एवं मूल्यविहीन समाज की यही नवीन संकल्पना सभी को छल रही हैं। 'हवन' की पात्र गुड्डो अमेरिका में रह रहे प्रवासी भारतीय समाज की इसी मानसिकता को उजागर करती हुई कहती है, "सामाजिक या राजनीतिक स्तर पर किसी तरह की सक्रियता भी नहीं। न ही व्यक्तिगत रूप से वे अपने से कमजोर और जरूरतमंद की मदद का बीड़ा उठाते हैं। इनमें से कुछेक भारत में अपने परिवार को पैसा जरूर भेजते हैं। इसके आगे उनकी दुनिया का विस्तार नहीं होता। बस जी-जान लगाकर बात करना और उनसे अपने लिए नई-से-नई सुविधा जुटाना। सभी इसीलिए तो आते हैं इस देश में! अपनी जात, अपने वर्ग या समाज और परिवार के बँधनों से, दायित्वों से निकल मुक्त जीवन जीने।"[8]

गुड्डो के जीवन का यही उतार-चढ़ाव उसे अंदर तक झकझोर देता है। जिन संस्कारों को बचाने के लिए उसने अपना संपूर्ण जीवन होम कर दिया, आखिर में वह कितने खोखले एवं स्वार्थी बन गए। भारत से अमेरिका तक की दौड़, प्रतिकूल परिवेश में संघर्ष करने की जिजीविषा एवं साहस अखिरकार बेमोल होकर रह गए। विदेशी परिवेश में रहकर भी अपने मूल्यों एवं संस्कारों को वह जितना सहेजकर रख पाती उतना उन्हें बचाने का प्रयास किया, किन्तु एक उन्मुक्त भौतिकवादी परिवेश में यह कहाँ तक संभव था, ऐसे में अमेरिका में एक अकेली स्त्री को खुद के पैरों पर खड़े होना तो और भी दुष्कर था। यद्यपि गुड्डों ने अपने दृढ़ साहस एवं मजबूत इच्छाशक्ति से एक स्त्री के लिए इस दुष्कर कार्य को सरल भी कर दिया, किन्तु उसे भी कहीं-न-कहीं अपने मूल्यों एवं सिद्धान्तों से समझौता ही करना पड़ा। डॉ. जुनेजा से उसके संबंध उसके मूल्यों से गिरने, संभलने एवं एक-दूसरे पर आत्मनिर्भरता को ही बखान करते हैं। अपने पति की मृत्यु के बाद से ही दृढ़ रही गुड्डो

अमेरिका के संघर्ष से टूटकर बिखर जाती है और गिरकर संभलने के इसी प्रयास में डॉ. जुनेजा उसकी जिंदगी में आता है। "गुड्डो मुसकुरा दी। एक नर्म सी गर्माहट उसके भीतर धीरे-धीरे घुलती जा रही थी। अवश हो रही थी गुड्डो।....गुड्डो किसी ओर दुनिया में थी। उसकी बंद आँखों में हर अहसास, हर गंध-स्वाद एक स्वप्निल जगत की तरह तैर रहा था, जिसमें कितनी ही तस्वीरें एक-दूसरे में गड्डमड्ड हो रही थीं...पति के जिस्म का जीवित स्पर्श, मृत पति की लाश के साथ अतृप्त मानसिक संभोग, बतरा के अधूरे अक्स। फिर तस्वीरें ओझल हो जातीं। बच जाता बस एक अहसास। वर्तमान का अहसास। एक इच्छित पुरुष की सबल और कोमल गिरफ्त का अहसास।"[9] गुड्डो को अमेरिका में अपने अकेलेपन एवं आत्मनिर्भर होने के लिए डॉ. जुनेजा के रूप में एक भरोसेमंद साथी अवश्य मिल गया था किन्तु वह इस रिश्ते के भविष्य को लेकर दुविधा में थी। "शादीशुदा जुनेजा के साथ क्या कोई किसी तरह का भी रिश्ता संभव है ?...यह कुछ पलों का सान्निध्य सुख किसी स्थायी रिश्ते की नींव हो सकता था...जैसे वह सोच रही है क्या जुनेजा भी ऐसी ही गंभीरता से उसके बारे में सोचता होगा?....घण्टों इन्हीं सवालों में जूझती रही गुड्डो। लौट आओ, गुड्डो, आओ अपने में।"[10] इस प्रकार अपने संस्कारों एवं मूल्यों से जूझती गुड्डो न तो पूर्णरूप से डॉ. जुनेजा के साथ इस रिश्ते को स्वीकार कर पाती है और न ही पूर्ण रूप से इससे मुक्त हो पाती है। इसी कशमकश में वह बार-बार इस रिश्ते से निकल भागना चाहती है, किंतु विदेशी परिवेश में स्वयं को स्थापित करने की मजबूरी उसे इस रिश्ते से पूरी तरह बाहर भी नहीं आने देती। परिणामस्वरूप डॉ.जुनेजा से उसके संबंध केवल उसकी मजबूरी बनकर रह जाते हैं। डॉ.जुनेजा इसे स्वयं भी स्वीकार करता है, "तुम इस नजरिए से क्यों देखती हो ? हम दोनों के बीच जो इतना कुछ शेयर करने को है - लगातार एक-दूसरे के साथ की चाह, घंटों बातें करना, एक-दूसरे की तकलीफों का मिलकर सामना करना - यह क्या रिश्ता नहीं ? परदेश में कितने अकेले हैं हम! क्या ये रिश्ता हमें जिंदा रखने के लिए जरूरी नहीं!...क्या इसके कुछ भी मायने नहीं तुम्हारे लिए ?"[11] इस प्रकार भारत में पले बढ़े डॉ. जुनेजा के लिए यह संबंध केवल स्वार्थ एवं कामइच्छा की पूर्ति का एक साधन मात्र है; जबकि गुड्डो इस रिश्ते का कहीं न कहीं भविष्य तलाश रही थी। इस प्रकार सुषम बेदी इस उपन्यास में केवल अमेरिका में जाकर रह रहे युवाओं की दिशाहीनता का ही बोध नहीं कराती अपितु भारत में जन्मे, पले-बढ़े ऐसे पुरुष एवं महिलाओं के भारतीय संस्कारों से पदच्युत होने एवं गिरने संभलने की कलई भी खोलती है। अमेरिका में रह रहे प्रवासी समाज में पश्चिमी जीवन-शैली एवं खुलेपन का समावेश धीरे-धीरे होता जा रहा है। गुड्डो जैसे पात्र इस उन्मुक्त परिवेश में घुटते हुए छटपटाते रहते हैं किंतु अंत में इसी को अपनी नियति मानकर जीना स्वीकार कर लेते हैं। ठीक यही हाल वहाँ रह रहे अधिकांश प्रवासियों का भी है, जिनमें से कुछ ने इस भौतिकता के लबादे को अपनी इच्छा से ग्रहण कर लिया है, जबकि बाकी की यह मजबूरी बन गया है। वास्तविकता यही है कि परदेश में अपने संस्कारों एवं मूल्यों से विलगाव करना एवं पश्चिमी संस्कृति का अनुसरण करना इन प्रवासी भारतीयों को एक दुःखद त्रासदी की ओर निरंतर ले जा रहा है, किंतु इसका इन्हें अहसास तक नहीं है।

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मार्च 2020
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

गुड्डो अमेरिका में भी भारतीय बनकर ही जीना चाहती है। यद्यपि उसे यहाँ अपने मूल्यों एवं संस्कारों से समझौता करना पड़ता है तथापि वह जितना कुछ बच जाए उसे सहेजने की लगातार कोशिश करती रहती है। अपनी इसी इच्छा के लिए वह अपनी पुत्रियों से दूर रहकर भी उन्हें भारतीय संस्कृति एवं मूल्यों से आत्मसात कराती है। उनकी पढ़ाई के पश्चात् वह उनके सुखद भविष्य की चाह में उनकी शादियाँ भारतीय लड़कों से करवाती है। वह मानती है कि केवल भारतीय संस्कृति एवं जीवन पद्धति के द्वारा ही जीवन को सुखमय बनाया जा सकता है। लेकिन गुड्डो के स्वयं के सिद्धान्त एवं मान्यताएँ उस समय ध्वस्त हो जाते हैं, जब उसके स्वयं के दामाद अमेरिका आने के बाद गिरगिट की तरह रंग बदल लेते हैं। उसकी पुत्रियों अणिमा और तनिमा के पति राकेश और अनुज केवल अमेरिकी ग्रीन कार्ड की प्राप्ति हेतु उनसे शादी करते हैं। अमेरिका में रहने का स्थायी बंदोबस्त होते ही वह दोनों ही अणिमा और तनिमा से शादी के रिश्ते को तोड़कर स्वछंद जीवन जीना चाहते हैं। गुड्डो ने अमेरिका में रहकर भी अपनी बेटियों को भारतीय संस्कार दिए थे, इसी कारण वह यहाँ आकर भी अमेरिकी जीवन-शैली को पूर्ण रूप से स्वीकार नहीं कर पाई थी। जबकि इसके विपरीत इनके पति जो भारत में ही पले-बढ़े थे। इतनी जल्दी अपने मूल्यों से विमुख हो जाएंगे, इसका अहसास न तो गुड्डो को था और न ही अणिमा और तनिमा को। अस्पताल में नौकरी लगने के पश्चात् अणिमा का पति राकेश अणिमा को अमेरिकी स्टाइल में ढालना चाहता था, किंतु अणिमा के लिए यह स्वीकार्य न था। "अणिमा के लिए अपने मूल्यों को एकदम झटककर अलग कर देना मुमकिन नहीं है। जिस तरह वह मन मारकर राकेश के कहे मुताबिक करती जाती है, अगर एक कमजोर हिन्दुस्तानी पत्नी बनने का तकाजा न होता तो झटक ही चुकी होती। सच में मन से प्यार कर नहीं पाई राकेश को। उसके व्यवहार में पुरुष अहं का बोलबाला था।"[12] राकेश का यही पुरुष अहं अणिमा को पत्नी के रूप में बार-बार प्रताड़ित तो करता है, परंतु इस रिश्ते की पवित्रता एवं समानता का हक नहीं दे पाता। परिणामस्वरूप दोनों का इस संबंध से मोह भंग होता चला जाता है और अंत में इसकी परिणति एक-दूसरे से अलग होना होती है। "तिलमिला गई अणिमा शर्म करो कुछ। अपनी बीवी से ऐसी बातें कहते कुछ दया नहीं आती तुम्हें। सच कहूँ तो उस वक्त तुम सिर्फ अमेरिका आने के सपने देख रहे थे...तुमने मुझे नहीं देखा..देखा एक ग्लैमरस भविष्य। मेरी जगह कोई भी होती तुम तैयार हो जाते शादी को। पर शादी कोई सीढ़ी नहीं है कहीं पहुँचने की। वह तो खुद ही एक मुकाम है। अब यहाँ पहुँचे ही हैं तो उसे सही ढंग से जीने की कोशिश करनी है हमें। न तुम मुझे बदल सकते हो और न ही मैं तुम्हें बदलना चाहती हूँ। पर एक-दूसरे के लिए कुछ लचीला तो हमें होना ही है...तुम अपने बाप-दादों जैसा दकियानूसी मार्चों मर्द बने रहना चाहते हो तो।"[13] अणिमा जहाँ इस रिश्ते को संभालने के लाख जतन और समर्पण करती है तो वहीं राकेश का अहं और अधिक बढ़ता जाता है। गुड्डो अपनी बेटी को बार-बार समझाती है किंतु आखिर में अणिमा का धैर्य जवाब दे जाता है और वह स्वयं को इस दोगले रिश्ते से स्वतंत्र कर लेती है।

ठीक यही हाल गुड्डो की छोटी बेटी तनिमा और उसके पति अनुज के रिश्ते का है। तनिमा अनुज से प्रेम विवाह करती है, किंतु फिर भी अनुज का तनिमा के प्रति प्रेम में सम्पर्ण भाव न होकर

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मार्च 2020
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

केवल अवसरवादिता है। वह तनिमा से अपने रिश्ते को केवल घर तक सीमित रखना चाहता है। इस प्रकार वह इस संबंध की पवित्रता के बजाए बाहरी दिखावे एवं स्वछंदतापूर्वक जीवन जीने को ही वास्तविकता मानकर जीवन जीना चाहता है। वह तनिमा की परवाह किए बिना अस्पताल में अपनी सहकर्मी साथियों से संबंध बनाता है और अणिमा के टोकने पर उसे बरगलाते हुए कहता है "अनुज उसकी लल्लो-चप्पो कर रहा था, तुम समझती क्यों नहीं। सेक्स और प्यार दो अलग-अलग चीजें हैं। जो प्यार मेरे मन में तेरे लिए है वह किसी और के लिए हो ही नहीं सकता। अव्वल तो मैंने कुछ किया ही नहीं अगर कुछ कर भी लूँ तो उससे हमारे आपसी रिश्ते पर थोड़े ही कोई फर्क पड़ेगा। तलाक-वलाक की बात भूल जा। ऐसी अफवाहों पर कोई तलाक लिए जाते हैं। एकदम बच्ची है तू। जो कोई कुछ भी कह देता है, वही मान लेती है।"[14] जब तनिमा उससे सच जानने की जिद करती है तो अनुज स्वीकारते हुए कहता है "दरअसल मैं सोचता हूँ मुझे यहाँ शादी करवाकर आना ही नहीं चाहिए था। इतनी स्मार्ट और खुली तबीयत की लड़कियाँ मिलती हैं और अपने मन को मारकर रह जाना पड़ता है। तुम मुझसे एक समझौता क्यों नहीं कर लेती...न मैं तुम पर कोई बंदिश लगाऊँगा, न तुम ही मुझ पर लगाओ।"[15] अंततः गुड्डो की दोनों ही बेटियाँ भारतीय लड़कों से विवाह करके भी सुखी नहीं रह पाई। गुड्डो का अपनी संतानों के लिए किया गया जीवन भर का परिश्रम एवं त्याग एक ही पल में बिखर गया। इस प्रकार कहा जा सकता है कि 'हवन' उपन्यास के स्त्री पात्र अपनी अस्मिता के लिए संघर्षरत रहते हैं, वे रिश्तों को निभाने संभालने के लिए छटपटाते रहते हैं और अंततः रिश्ते भी टूट जाते हैं और वह स्वयं भी। अतः कहा जा सकता है कि यह उपन्यास स्त्री जीवन की व्यथा-कथा को भी कहता है। 'हवन' उपन्यास में स्त्री जीवन के विविध आयामों को नितिन मिश्र अपने लेख 'स्त्री चिंतन का विभिन्न कलेवर' 'हवन' में इस प्रकार से विश्लेषित करते हैं, "अपने समय के सच को गहाई से छूते हुए यह उपन्यास स्त्री चिन्तन के विभिन्न कलेवर प्रदान करता है।"[16]

अमेरिका में भौतिक सुखों एवं तेजी की चाह में गुड्डो के जीवनभर की पूँजी समाहित हो जाती है। वह बेहतर और बेहतर कि चाह में एक-एक करके सबसे अलग होती जाती है या उसके अपने उससे अलग हो जाते हैं। गुड्डो का बेटा राजू भी इसी हवनकुंड की भस्माग्नि में भस्म हो जाता है।

"भभकती लपटों में गुड्डो देखती है...एक अजीब-सा, पहचाना और अनपहचाना चेहरा...यह चेहरा तो किसी हारे हुए सुरपरमैन का है..कानों में गुंजार सुनती है लपटों की।

मैंने कुछ खास करना है...बड़ा बनना है...ढेर सारे पैसों से अपनी एक कंपनी बनाऊँगा, उसका प्रेसिडेंट हूँगा मैं खुद।

पर तुझे जल्दी क्या है, राजू...बता जल्दी क्यों है...ऐसी बदहवास दौड़...तू चोट खा जाएगा...मेरा राजू...।

भयंकर लपटें...सबकुछ छीन लेने वाली आग...राजू कहाँ खो गया। दिखता क्यों नहीं...ऐसे तो पागल हो जाएगा तू...रूक जा, राजू...।"[17]

इस प्रकार उपन्यास के अंत में गुड्डो सबकुछ पाकर भी खाली हाथ ही रह जाती है। डॉ. शिखा श्रीधर 'हवन' उपन्यास में प्रवासी भारतीय समाज की त्रासदी को इस प्रकार से अभिव्यक्त करती है, "हवन उपन्यास प्रवास पर गई पहली पीढ़ी के अंर्तद्वंद्व को अपने में समेटे हुए है जिसमें

नष्ट होने की पीड़ा है, तो कुछ पाने की आकांक्षा भी है। वर्तमान की निराशा और भविष्य की संभावनाओं के बीच हवन अपनी सार्थकता सिद्ध करता है। स्वप्न के ध्वस्त होने की पीड़ा और नूतन भविष्य की धूमिल-सी आशा को साथ लिए हवन उपन्यास अपने समय की सार्थक अनुगूँज है।"[18]

वह जीवनभर इसी मृग मारिचिका के पीछे भागती रही, किंतु अंत में उसे खाली हाथ ही रहना पड़ा। यह दुःखद त्रासदी केवल अकेले गुड्डो की जीवन त्रासदी न होकर अमेरिका में रह रहे भारतीय डायस्पोरा के अधिकांश लोगों की त्रासदी है। अमेरिका में जाकर राकेश एवं अनुज के समान ही अन्य भारतीय भी कितनी जल्दी अपने संस्कारों से विमुक्त होकर निर्वासित जीवन स्वीकार कर लेते हैं, 'हवन' उपन्यास में इसकी मार्मिक अभिव्यक्ति हुई है। अतः प्रस्तुत उपन्यास परदेश में बेगानेपन एवं अवसाद में जीवन जी रहे ऐसे भारतीयों के जीवन यथार्थ की कहानी कहता है, जिनके लिए भौतिक संपन्नता और स्वछंदता ही खोखले जीवन का आधार बनती जा रही है।

वस्तुतः विदेशों में रह रहे प्रवासी भारतीय समाज के लिए भारतीय संस्कारों एवं मूल्यों को सहेजना सबसे बड़ी चुनौती है और इसी जद्दोजहद में वह जी रहे हैं। डॉ. शिखा श्रीधर 'हवन' उपन्यास में निहित प्रवासी समाज एवं उसके जीवन संघर्ष को इस प्रकार से अभिव्यक्त करती है; 'हवन' सुषम जी का ऐसा ही उपन्यास है, जो अपने भीतर प्रवासी जीवन के उतार-चढ़ाव समेटे हुए है। सुषम जी ने इसके माध्यम से प्रवासी समाज की अभिलाषाओं, चुनौतियों, संघर्षों को स्वर प्रदान किया है। यह उपन्यास प्रवासी जीवन के यथार्थ के निकट है। इसकी सार्थकता यही है कि यह प्रवासियों की ओर से उनकी कथा कहता है। इस प्रकार यह प्रवासी जीवन के सभी पक्षों से हमारा साक्षात्कार कराता है।"[19] अतः कहा जा सकता है कि 'हवन' उपन्यास अमेरिकी भारतीय समाज के उत्थान एवं पतन दोनों ही रूपों को उद्घाटित करता है।

भारतीयों के अपने संस्कारों एवं मूल्यों के पतन की यह कहानी केवल अमेरिका में रह रहे भारतीयों की ही कहानी नहीं है, अपितु भारत में भी पश्चिमी संस्कृति का अंधानुकरण निरंतर बढ़ते जाने की कहानी है। गुड्डो जैसे प्रवासी भारतीय जहाँ विदेशों में भारतीय मूल्यों को सहेजने के लिए छटपटाहट में जी रहे हैं, तो वहीं बत्रा जैसे लोग भारत से बाहर जाने के लिए अपने मूल्यों एवं संस्कारों को भी तिलाज़ली देने के लिए तैयार है। अमेरिका में प्रवासी भारतीयों के स्वार्थ एवं अवसरवादिता से तंग आ चुकी गुड्डो को रह-रहकर भारत में मित्रों, परिवारजनों एवं संगे-संबंधियों की स्मृतियाँ आती हैं। कदापि वह अभी भी भारत के स्वप्न में ही जी रही है। जबकि उसके दोनों दामाद राकेश व अनुज आज के भारत में पले-बढ़े हैं। आज भारत कितना बदल चुका है। इस बात को गुड्डो ही नहीं यहाँ से तीस चालीस वर्ष पूर्व गया कोई भी प्रवासी तब तक नहीं समझ पाता, जब तक वह स्वयं परिवर्तन के इस दंश को झेल नहीं लेता है। गुड्डो के भारतीय दामादों ने ही नहीं अपितु उसके बहन, बहनोई तक ने उसे संबंधों में आ रही रिक्तता का अहसास बहुत बार करवाया था, किंतु उसे सबसे अधिक ठेस तब लगती है, जब उसके भारत में सबसे अधिक भरोसेमंद एवं पारिवारिक मित्र वकील साहब बत्रा जी भी उसे इस्तेमाल करके अमेरिका में रहने की स्थायी व्यवस्था करना चाहते हैं। बत्रा जी की पुत्री

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मार्च 2020
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

अमेरिका में अपनी डिलेवरी सिर्फ इसीलिए करवाना चाहती है कि उसके बच्चे को अमेरिका की नागरिकता मिल जाए एवं इसके बाद में वह लोग भी वहाँ के निवासी बन सकें। गुड्डो से मीता डिलेवरी के विषय में बतलाती हुई कहती है, "नहीं, पूछा भी नहीं...दरअसल इन्होंने कहा कि अमेरिका में डिलेवरी करा ले तो बच्चा वहीं का नागरिक बन जाएगा, फिर अट्ठारह साल का होने पर वह हमें भी यहाँ बुला सकता है।...वरना कोई नजदीकी रिश्ता न हो तो अमरीका में आना एकदम असम्भव-सा होता जा रहा है।"[20] गुड्डो यह सुनकर हतप्रभ रह जाती है। आखिर कितनी जल्दी है इन्हें अमेरिका में बसने की, इन्हें इसकी कितनी अधिक किसी जल्दी कीमत चुकानी पड़ेगी, इसका अहसास तक नहीं है। गुड्डो की अंतरात्मा स्वयं को झकझोर रही थी कि वह कहाँ है और उसे क्या होना चाहिए था। प्रारंभ से अंत तक अपने संस्कारों को सहेजती गुड्डो हर बार किसी अपने के द्वारा ही छली जाती है। बत्रा जब उसके ज्यादा नजदीकी बढ़ाने की अनैतिक कौशिश करता है तो उसकी अंतरात्मा यह स्वीकार नहीं कर पाती है। वह उसे झटकती हुई कहती है, "आप समझते क्या हैं, यहाँ आकर मैं कुछ और हो गई हूँ...मेरी वैल्यूज, मेरे संस्कार बदल गए हैं...आपकी वहाँ कभी ऐसी हिम्मत नहीं हुई थी और यहाँ मेरे घर में ही आप मेरे मेहमान बनकर मुझे लूट रहे हैं...मैं लिहाज और मुरव्वत बरतती रही...पर आपने सच में समझा कि यहाँ के माहौल ने मुझे बदल दिया है। जिस आजादी की बात मैं कर रही थी...आपने उसे जिस्मानी आजादी भर ही समझ लिया। जितने हिन्दुस्तानी मर्द मिलते हैं, सोचते हैं, चूँकि अमरीका में रह रही है, इसलिए जरूर कुछ लूज या लिबरल हो गई होगी....उनका रवैया वही होता है, जो इस वक्त आपका है। सुन लीजिए, जिस मिट्टी-काठी की मैं बनी थी, वही अब भी हूँ और वही कुछ मैंने अपने बच्चों को भी दिया है।"[21] प्रवासी भारतीयों के प्रति यही नजरिया अधिकांश भारतीयों का है, किन्तु सच इससे थोड़ा विपरीत है। ये प्रवासी भारतीय जिन संस्कारों और मूल्यों को अपने साथ लेकर जाते हैं, उन्हें ही सहेजने की जिद में बिखरते और टूटते रहते हैं, लेकिन फिर से छिटकते जा रहे इन संस्कारों को संभालने की प्रयास करते रहते हैं। गुड्डो ऐसे ही प्रवासी भारतीयों का प्रतिनिधित्व करती है, वह बत्रा को धिक्कराती हुई कहती है "नहीं वकील साहब, आप वहाँ हिन्दुस्तान में बैठे-बैठे कुछ नहीं समझते अपने परदेश में रहने वाले देशवासियों को, हिन्दुस्तान तो अपनी गति से बहता जाता है, आगे बढ़ता है या आधुनिक होता जाता है, पर हम जिस बिंदु पर उसे छोड़कर आते हैं उससे आगे नहीं बढ़ते...हिन्दुस्तान में चाहे लड़के-लड़कियों को डेटिंग की सामाजिक स्वीकृति मिल जाए पर जिन सामाजिक प्रतिबंधों को या स्वीकृतियों को मैंने अपने समय में जाना है, उन्हीं को मैं अपने बच्चों की जिंदगी पर लागू करती हूँ। जानते हो हिन्दुस्तान में समय आगे बढ़ता रहता है, पर हमारा समय वहीं रूक जाता है, जो हमारे अतीत का हिन्दुस्तान था, वही वर्तमान और भविष्य का बना रहता है।"[22] वकील साहब की ही भाँति हिन्दुस्तान में बैठे लोग परदेश में रह रहे प्रवासी भारतीयों को संस्कारों की दुहाई देते हैं, लेकिन वह खुद ही अपने मूल्यों से इतना विमुख हो चुके हैं कि अपनी स्वार्थपूर्ति के लिए नैतिक एवं अनैतिक सभी कार्यों को करने से पीछे नहीं हटते हैं। सुषम बेदी ने अपने 'हवन' उपन्यास में प्रवासी भारतीयों के जीवन त्रासदी को तो उजागर किया ही है साथ ही

भारतीयों के दोगलेपन, अवसरवादिता और मूल्यहीनता का भी कच्चा चिट्ठा खोला है। अभिनव अपने लेख 'अमेरिका में प्रवासी भारतीय जीवन एवं उनकी समस्याओं का जीवंत दस्तावेज : हवन' में अमेरिका में रह रहे प्रवासी भारतीय समाज की परिवर्तित जीवन शैली को इस प्रकार से रेखांकित करते हैं, "सुषम बेदी ने इन सभी समस्याओं को एक सूत में पिरोकर अमेरिका में प्रवासी समाज की दशा एवं दिशा को उपन्यास के माध्यम से प्रस्तुत किया है। जो यथार्थ के धरातल पर 'हवन' द्वारा सत्यापित है। प्रवासी जीवन निरंतर संघर्ष करते हुए अपने स्वप्नों सामंजस्यों व अपनी संततियों के उन्नत भविष्य हेतु त्याग भावना रखते हुए अपनी इच्छाओं की आहुति 'हवन' में देते हैं। परंतु इन प्रवासियों का 'हवन' शांत होने की अपेक्षा और अधिक प्रचंड ज्वाला लेकर दहकती है, जिसे ठंडा कर पाने में अमेरिका का प्रवासी भारतीय समाज असक्षम अनुभव करता है। अन्ततः 'हवन' उपन्यास प्रवासी समाज का जीवंत दस्तावेज प्रतीत होता है।"[23]

निष्कर्ष

अतः प्रस्तुत उपन्यास प्रवासी भारतीयों का भारतीय में अमेरिकी बनने, मूल्यों से गिरने, संभलने एवं उनको सहेजने की व्यथा-कथा कहता है, जिसमें एक ओर प्रवासी भारतीयों के जीवन संघर्ष एवं त्रासदी है, तो वही दूसरी ओर अमेरिका के उन्मुक्त परिवेश में पश्चात्य समाज एवं जीवन-शैली में निर्वासित जीवन जी रहे भारतीयों की पीड़ा की मुखर अभिव्यक्ति हुई है। अतः सुषम बेदी का 'हवन' उपन्यास अमेरिका में रह रहे प्रवासी भारतीय समाज का जीवंत दस्तावेज है, जिसमें प्रवासी भारतीयों के संघर्ष, सफलता के साथ-साथ विघटित होती जीवन-शैली को परत-दर-परत उद्घाटित किया गया है।

संदर्भ ग्रंथ

1 ग्रोवर, किरण (2015), सुषम बेदी का 'हवन': प्रवासी समाज के संघर्ष का संपुटन Golden Research Thoughts, Vol. 5, Issue 4, Oct., pg. 1

2 बेदी, सुषम, हवन, प्रकाशक, हिंद पॉकेट बुक्स प्राइवेट लि., जे-40, जोरबाग लेन, नई दिल्ली-11003, पृष्ठ 52

3 वही, पृष्ठ 54

4 वही, पृष्ठ 54

5 वही, पृष्ठ 148

6 वही, पृष्ठ 169

7 वही, पृष्ठ

8 वही, पृष्ठ 77

9 वही, पृष्ठ 60-61

10 वही, पृष्ठ 103

11 वही, पृष्ठ 150

12 वही, पृष्ठ 152

13 वही, पृष्ठ 124

14 वही, पृष्ठ 124

15 डॉ. श्रीधर, शिखा (2018), पाश्चात्य सभ्यता के व्यामोह का हवनकुंड सुषम बेदी का उपन्यास 'हवन', प्रकाशक तक्षशिला प्रकाशन, 98-ए, हिंदी पार्क, दरियागंज, नई दिल्ली-110002, पृष्ठ 101

16 मिश्र, नितिन (2019), स्त्री-चिंतन का विभिन्न कलेवररू 'हवन' प्रवासी स्त्री-लेखन विमर्श के विविध आयाम, माया प्रकाशन, कानपुर, पृष्ठ 215

17 डॉ. श्रीधर, शिखा, पाश्चात्य सभ्यता के व्यामोह का हवनकुंड सुषम बेदी का उपन्यास 'हवन', प्रकाशक तक्षशिला प्रकाशन, 98-ए, हिंदी पार्क, दरियागंज, नई दिल्ली-110002, पृष्ठ 105

18 बेदी, सुषम, 'हवन', पृष्ठ 59-60

19 बेदी, सुषम, 'हवन', पृष्ठ 181

20 वही, पृष्ठ 186

21 वही, पृष्ठ 187

22 वही

23 अभिनव (2019), अमेरिका में प्रवासी भारतीय जीवन एवं उनकी समस्याओं का जीवंत दस्तावेजः 'हवन', अनुसंधान (त्रैमासिक शोध पत्रिका), सिविल लाइन, अलीगढ़, जुलाई दिसम्बर (संयुक्तांक), पृष्ठ 92